पंद्रह दवाओं के पेटेंट आवेदन खारिज

भारत के परंपरागत ज्ञान को हथियाकर यूरोपीय देशों के मंसूबों को वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने विफल कर दिया

मदन जैड़ा
नई दिल्ली

भारत के परंपरागत चिकित्सा ज्ञान को हथियाकर दवा बनाने के यूरोपीय देशों के मंसूबों को वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने विफल कर दिया है। भारतीय जड़ी-बूटियों से यूरोपीय देशों, चीन और केन्या आदि ने कैंसर, मधुमेह, हृदयाघात और मोटापे की 15 प्रभावी दवाएं तलाश कर ली थी और इनके पेटेंट के लिए आवेदन किया था लेकिन यूरोपीय पेटेंट ऑफिस के साथ हुए समझौते के तहत भारत ने अपनी आपत्ति दर्ज कराई और प्रमाण रखे कि भारत में पहले से ही इन जड़ी-बूटियों का यूनानी, सिद्ध और आयुर्वेद पैथियों में इन रोगों के इलाज के लिए इस्तेमाल हो रहा है। सीएसआईआर के महानिदेशक समीर के ब्रह्मचारी और आयुष विभाग की सचिव एस. जालजा ने कहा कि कि हमने 80 और ऐसे ही पेटेंट आवेदनों को रद्द कराने की प्रक्रिया शुरू की है तथा इस साल के अंत तक ये भी रद्द कर दिए जाएंगे। परंपरागत चिकित्सा ज्ञान को संरक्षित करने के लिए सीएसआईआर ने कुछ माह पूर्व ट्रेडिशनल नॉलेज लाइब्रेरी (टीके डीएल) तैयार किया था। समझौते के तहत इसे यूरोप, अमेरिका के पेटेंट कार्यालयों से संबद्ध किया गया है।

टीके डीएल के निदेशक डा. वी. के. गुप्ता ने बताया कि इटली की कंपनी ने पिस्ता से कैंसर रोधी दवा, स्पेन की कंपनी ने खरबूजे से सफेद दाग की दवा, कोरियाई कंपनी ने भारतीय कमल से दिल के उपचार की दवा, चीन की फार्मा कंपनी ने बंगाली चने वाली काले चने से मोटापारोधी दवा, केन्याई कंपनी ने नीम और घृतकुमार तथा दालचीनी से मधुमेह रोधी दवा, डेनमार्क की फार्मा ने हल्दी, जीरा, अदरक तथा प्याज का इस्तेमाल करते हुए छाहरेपन की दवा, जर्मनी की

चोरी और सीनाजोरी

- साल के अंत तक खारिज होंगे 80 और ऐसे आवेदन
- पूर्व में मिले चुके 2000 पेटेंट को रद्द कराने के लिए डब्ल्यूटीओ में जाएगा

फार्मा ने घृतकुमार से मोटापा भगाने वाली दवा, जर्मनी की ही कंपनी ने अर्जुन से एंटी एजिंग दवा, नीदरलैंड की कंपनी ने अंगूर और सेब के रस से दिल का टॉनिक तैयार करके पेटेंट के लिए आवेदन किया था। लेकिन इन औषधियों का इन्हीं व्याधियों में इस्तेमाल भारत के परंपरागत चिकित्सा ज्ञान में है जिसे टीकेडीएल में लिपिबद्ध किया गया है।

गुप्ता के अनुसार अमेरिका की मशहूर कंपनी नेट्रोजन ने अश्वगंधा के इस्तेमाल से तनाव, अनिद्रा तथा एंग्जाइटी की दवा ली। वहीं की एक अन्य कंपनी ने ब्राह्मी, चाय की पत्तियों, अश्वगंधा और हल्दी का इस्तेमाल करते हुए एंटी एजिंग (जाददास्त) दवा बनाई थी। एक भारतीय कंपनी मैसर्स अश्वगंधा लिमिटेड ने भी यूरोपीय पेटेंट आफिस में अर्जुन से बने दिल के टॉनिक की दवा के पेटेंट के लिए आवेदन किया था लेकिन सीएसआई की आपत्तियों के बाद तीनों कंपनियों ने इसे वापस ले लिया।

टीकेडीएल : आयुर्वेद, यूनानी तथा सिद्ध पैथियों के 2.70 लाख परंपरागत चिकित्सा फार्मूलों को इसमें डिजिटल और पेटेंट फार्मेट में लिपिबद्ध किया गया है। फार्मूले अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश तथा जापानी भाषाओं में हैं। अब योग की विधियों को भी इसमें डाला जा रहा है।

यूरोप और यूएस के पेटेंट कार्यालयों से टीकेडीएल का एग्रीमेंट हो चुका है तथा अब कनाडा और जापान के पेटेंट कार्यालयों से भी समझौता किया जाएगा।

फायदा : याद होगा यूरोप में नीम और अमेरिका में हल्दी पर पेटेंट कर लिया गया था। इन्हें रद्द करने में भारत को लंबी कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ी।

दस साल का समय और करीब 10 करोड़ रुपये खर्च हुए। लेकिन टीकेडीएल के जरिये जो 15 पेटेंट रद्द कराए गए हैं उनमें कोई कोर्ट-कचहरी का चक्कर नहीं पड़ा।